Seventeenth Loksabha

an>

Title: Regarding the 400th celebration of the 9th Sikh Guru, Shri Guru Teg Bahadur Sahib Ji.

माननीय अध्यक्ष :श्रीमती हरसिमरत कौर बादल जी ।

श्रीमती हरसिमरत कौर बादल (भटिंडा) : अध्यक्ष महोदय, आपका शुक्रिया ।

"तिलक जंजू राखा प्रभ ताका, कीनो बड़ो कलू महि साका"

अध्यक्ष महोदय, आज हमारे 9वें गुरु श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी का शहीदी दिवस है । उन्हें 'हिन्द दी चादर' (दि शील्ड ऑफ इंडिया) का खिताब इसलिए दिया गया था, क्योंकि दुनिया और देश के इतिहास में पहली बार हमें एक ऐसी कुर्बानी और शहादत की मिसाल मिलती है, जहां एक गुरु ने किसी दूसरे धर्म को बचाने के लिए अपनी कुर्बानी दे दी थी । सन् 1675 में कश्मीर के पंडित श्री आनंदपुर साहिब से श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी के पास रोते और कुरलाते हुए पहुंचे थे । उस वक्त मुगल हुकूमत ने ठान ली थी, कसम खा ली थी कि वे हिन्दुस्तान से हिन्दुओं को खत्म करके ही सांस लेंगे । उन्होंने ये ठान लिया था कि वे हर रोज़ सवा मन जनेऊ उतारकर ही सांस लेंगे ।

महोदय, आप सवा मन जनेऊ का मतलब सोचिए कि कितने हजारों, लाखों हिन्दुओं का कत्ल या धर्म परिवर्तन करके ही ये मुगल राजा-बादशाह सांस लेते होंगे ।...(व्यवधान) प्लीज एक मिनट । हमारा हिन्दुस्तान उनकी वजह से बचा है, आप मुझे कुछ मिनट तो बोलने दीजिए ।

महोदय, जब पहली बार ये सभी पंडित उनके पास जाकर रोए थे, तो बहुत सोच-विचार के बाद उन्होंने कहा कि जब कोई महान इंसान अपनी शहादत देगा, तभी यह जुल्म रुक सकता है । उनके 9 साल के बेटे ने अपने बाप से पूछा कि पिताजी आपसे बड़ा महान और कौन हो सकता है । पहली बार दुनिया के इतिहास में एक इंसान श्री आनंदपुर साहिब से चलकर दिल्ली में आया और चांदनी चौक में हमारे गुरु साहब ने किसी और धर्म को बचाने के लिए अपनी शहादत दी थी ।

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्या, आपका धन्यवाद । यह सदन आपके साथ है ।

श्री रवनीत सिंह जी ।

... (व्यवधान)

श्रीमती हरसिमरत कौर बादल : महोदय, मैं यह अर्ज़ करती हूं कि आज आप दो मिनट का मौन रखें ।...(व्यवधान)

श्री रवनीत सिंह (लुधियाना): स्पीकर साहब, आपने मुझे आज बोलने की इजाजत दी है, इसके लिए धन्यवाद । आपसे जब बात हुई तो आपने भी कहा था कि आज के दिन मेरा उनके आगे सिर झुकता है । गुरु किसी एक व्यक्ति या एक धर्म के नहीं होते हैं, चाहे वे हिन्दू, सिख, मुस्लिम, ईसाई धर्म के हों । चूँकि हम मानते हैं कि उस समय औरंगजेब एक अलग तरह का राजा था, लेकिन सिख गुरु ने हमेशा से सबके लिए कुर्बानी दी है । उन्होंने कभी भी किसी एक धर्म की बात नहीं की थी ।... (व्यवधान)

12.11 hrs

At this stage, Shrimati Harsimrat Kaur Badal came and stood on the floor near the Table.

श्री रवनीत सिंह (लुधियाना): सर, हिन्द की चादर कहे जाने वाले हमारे 9वें गुरु, गुरु तेग बहादुर जी ने किसलिए कुर्बानी दी थी? उन्होंने शांति के लिए, सद्भाव के लिए कुर्बानी दी थी । आज ह्यूमन राइट्स को बचाने की बात हो रही है, उसके लिए उन्होंने कुर्बानी दी थी ।... (व्यवधान) उनके बेटे सर्ववंश दानी, गुरु गोविन्द सिंह जी ने अपना पूरा परिवार वार दिया था । जब उनके पास कश्मीर के पंडित कृपा राम जी अपने अन्य लोगों के साथ आए तो उन्होंने कहा कि औरंगजेब इतना जुल्म कर रहा है, इसलिए कुर्बानी देनी पड़ेगी । उसके बाद हमारे 9वें गुरु ने कहा कि मैं कुर्बानी देने के लिए बिल्कुल तैयार हूँ और उनके 9 साल के बच्चे, गुरु गोविन्द सिंह जी ने भी कहा कि इससे बड़ी कुर्बानी क्या होगी? आप दिल्ली जाइए और कुर्बानी दीजिए ।... (व्यवधान) उन्होंने चांदनी चौक पर आकर कुर्बानी दी तो उनके साथ उनके भाई मतिदास, भाई सतिदास को भी आरियों से चीरा गया । उनके साथ भाई दयाला जी को भी उबले हुए तेल में डाला गया ।... (व्यवधान)

श्री एस. एस. अहलुवालिया (बर्धमान-दुर्गापुर): सर, हमारी संसद के बगल में ही रकाबगंज गुरुद्वारा है । आज से 400 साल पहले यहां पर गुरु तेग बहादुर जी का संस्कार हुआ था । उनकी शहादत हुई थी । लाल किले के सामने शीशगंज गुरुद्वारा उसका प्रतीक है ।... (व्यवधान) जब डुगडुगी पिटवाई गई कि इन्होंने अपने धर्म के लिए अर्थात जनेऊ, तिलक और चुर्की के लिए शहादत दी है और इनका संस्कार अगर अपने संस्कारों के अनुसार नहीं हुआ तो हम दफना देंगे, तब लक्खी शाह बंजारा नाम का एक बंजारा उन्हें अपनी बेलगाड़ी पर डालकर लाया और बच्चों को बोल दिया कि जानवर खोल देना और झोपड़ी के अन्दर डालकर आग लगा देना, जिससे उनका संस्कार हो जाए और उसके बाद उनका शीश लेकर आनन्दपुर साहब चला गया । इसके लिए पार्लियामेंट और हिन्दुस्तान का संविधान गवाह है । अनुच्छेद 25, जो हमें अपने धर्म का प्रचार-प्रसार करने का अधिकार देता है, वह इस शहादत से आया है । वे जनेऊ नहीं पहनते थे, वे तिलक नहीं लगाते थे, चुर्की नहीं थी, उसके बावजूद हिन्दू-ब्राह्मणों की चुर्की, तिलक और जनेऊ की रक्षा के लिए उन्होंने शहादत दी थी ।... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आज उनकी शहादत को सब लोग याद कर रहे हैं ।

… (व्यवधान)

*m04

श्री रवनीत सिंह: स्पीकर साहब, धन्यवाद । आपने समय दिया । अभी उनका 400वाँ जन्म शताब्दी वर्ष भी चल रहा है । प्राइम मिनिस्टर साहब ने भी उनके बारे में कहा है । ह्यूमन राइट्स के बारे में अगली पीढ़ियां जान सकें, उसके लिए दिल्ली में उनके नाम पर एक नेशनल लेवल की यूनिवर्सिटी बननी चाहिए, जिससे उनका अगली पीढ़ियों तक नाम रहे ।... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : मैडम, आप भी सीट पर जातीं । माननीय सदस्या, अगर आप वेल में आ गई हैं तो मैं आपको बोलने की इजाजत कैसे दे सकता हूँ । मैंने आपको सबसे पहले मौका दिया था । आप सीट पर जाकर बोलती, लेकिन आप वेल में आकर बोल रही हैं ।

… (व्यवधान)

12.14 hrs

At this stage, Shrimati Harsimrat Kaur Badal went back to her seat.